उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)

इण्टरमीडिएट परीक्षा "अ
(उत्तराखण्ड) 12 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर	केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर
	3

नोट–केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

नोट–परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

ब उत्तर पुस्तिका की संख्या–

$ब_1$	$ब_2$	$ब_3$	$ब_4$

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा–

अनुक्रमांक (अंकों में)–

अनुक्रमांक (शब्दों में)-

विषय–

प्रश्नपत्र संकेतांक-

परीक्षा का दिन–

परीक्षा तिथि–

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय–

केन्द्र संख्या–

परीक्षा कक्ष संख्या-

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम–

दिनांक–

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न–पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या...

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक–

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक–

त्रुटि का प्रकार–

दिनांक–

हस्ताक्षर निरीक्षक–

परीक्षक, निम्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का विवरण यथास्थान भरें।

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	योग
01											
02											
03											
04											
05											
06											
07											
08											
09											
10											
11											
12											
13											
14											
15											
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											
31											
32											
33											
34											
35											

योग (शब्दों में)

योग (अंकों में)

Answer :- 1

(iii) क्रंदन

Answer :- 2

(ii) 2

Answer :- 3

(i) दालें

Answer :- 4

(i) निर्जलीकरण ।

Answer :- 5

F.P.O :- Fruit Product Order.

Answer :- 6

पारिवारिक आय के दो स्रोत निम्न हैं :-

(i) पेंशनरूपी आय

(ii) परिवार के मुख्या द्वारा अर्जित की गयी आय।

Answer :- 7

गर्म रंग :- लाल, पीला

ठंडे रंग :- आसमानी, हरा

Answer :- 8

वस्त्रों पर लगे जेल पॉलिश के धब्बों को नींबू और गर्म पानी की सहायता से हटाया जा सकता है।

Answer :- 9

बालक को स्तनपान कराने के लाभ निम्नलिखित हैं -

(i) बालक को स्तनपान कराने से शिशु को दूध के रूप में सुपाच्य आहार मिल जाता है।

(ii) स्तनपान कराने से शिशु को विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है।

Answer :- 10

खेसारी दाल या उससे बने बेसन को निरन्तर खाने से **लैथिरिस रुग्णता** नामक रोग हो जाता है।

लक्षण :- इस रोग के कारण शरीर **पंगु** बन जाता है तथा व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है, ये दो प्रकार के होते हैं —

(i) अस्थि लैथिरिस रुग्णता।
(ii) स्नायुविक रुग्णता।

Answer :- 11

स्तनपान कराने वाली माता की पौष्टिक आवश्यकता निम्न है-

(i) स्तनपान कराने वाली महिला के आहार में 700 gm ~~अधिक~~ ऊर्जा होनी चाहिए

(ii) प्रोटीन में इसको हरी सब्जियाँ, दालें देनी चाहिए,

(iii) उसे ताजें फल व मौसमी फल अवश्य देने चाहिए,

Answer :- 12

चैक चार प्रकार के होते हैं जो इस प्रकार है-

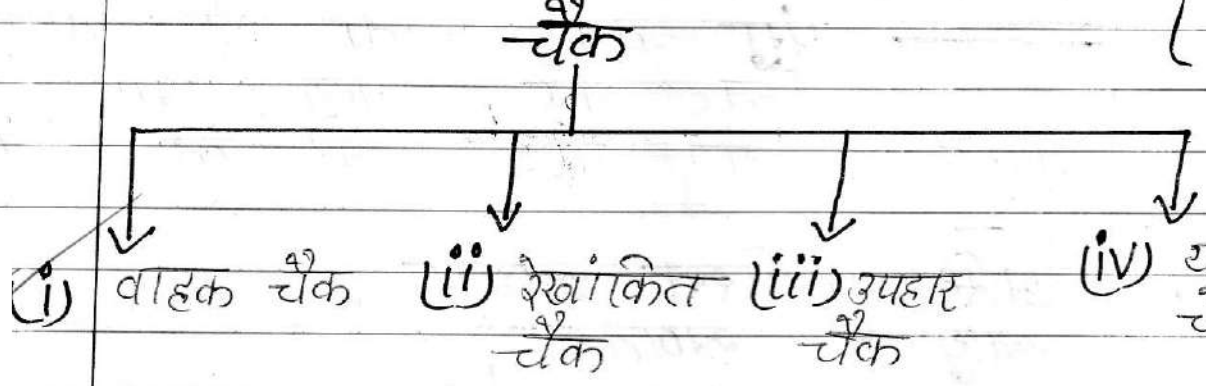

Answer :- 13

घरेलू हिसाब :-किताब :- परिवार के सदस्यों द्वारा खर्च किये गये धन का लिखित विवरण **घरेलू हिसाब-किताब** कहलाता है ये दो प्रकार के होते हैं-

(i) मासिक हिसाब -किताब
(ii) वार्षिक हिसाब - किताब

Answer :- 14

विनियोग के चार माध्यम निम्न है-

(i) बैंक द्वारा विनियोग
(ii) डाकघर द्वारा विनियोग।
(iii) ब्याज स्कीम द्वारा विनियोग।
(iv)

Answer :- 15

सफेद वस्त्रों पर नील इसलिए लगाया जाता है क्योंकि **सफेद कपड़ों पर पीलापन न आ जायें।** इससे वस्त्रों की चमक बनी रहती है।

Answer :- ~~17~~ 16

गृह विज्ञान के अध्ययन के दैनिक जीवन में दो उपयोग निम्न हैं -

(i) गृह विज्ञान का अध्ययन करके गृहिणी अपने परिवार के सदस्यों को पौष्टिक भोजन करा सकती है।

(ii) गृह विज्ञान की सहायता से वह, समय, श्रम, धन की बचत कर सकती है।

Answer :- ~~18~~ 17

-:- **वृद्धि :-** वृद्धि व्यक्ति के शारीरिक अंगों की बढ़ोत्तरी करती है, इसे ही वृद्धि के नाम से जाना जाता है।

-:- **विकास :-** यह परिवर्तन की वह उन्नतिशील श्रृंखला है शिशु के भ्रूणावस्था से प्रौढ़ावस्था तक चलती रहती है, विकास के नाम से जानी जाती है।

वृद्धि एवं विकास में अंतर इस प्रकार है -

	वृद्धि	विकास
(i)	वृद्धि जन्मजात गुणों पर आधारित है, जो एकांगी है।	(i) विकास सर्वांगीण रूप से होता है।
(ii)	वृद्धि प्रौढ़ावस्था आने पर रुक जाती है।	(ii) विकास जीवनपर्यंत चलता रहता है।
(iii)	वृद्धि वैयक्तिक भिन्नता पर आधारित है।	(iii) विकास वैयक्तिक भिन्नता पर आधारित नहीं है।
(iv)	वृद्धि को मापा जा सकता है।	(iv) विकास को मापा नहीं जा सकता है।
(v)	वृद्धि किसी एक पक्ष को प्रदर्शित करती है।	(v) विकास किसी एक पक्ष को प्रदर्शित नहीं करता।
(vi)	वृद्धि शारीरिक और मानसिक परिपक्वता लाती है।	(vi) विकास शारीरिक, मानसिक परिपक्वता न लाकर संवेगात्मक, सामाजिक परिपक्वता लाता है।

Answer :-18

-:- बच्चों में टीकाकरण की योजना

बच्चों में टीकाकरण बहुत आवश्यक होता है। इसकी सहायता से बच्चों को संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है। अगर बच्चों को जन्म के उपरांत टीकाकरण नहीं लगवाया जायेगा तो शिशु अनेक रोगों से रोगग्रस्त रह सकता है।

	टीकाकरण का नाम	समय
(i)	खसरे का टीका	48 घंटे में (जन्म के)
(ii)	D.P.T, पोलियो, हैपेटाइटिस B (पहली खुराक)	$1\frac{1}{2}$ माह में
(iii)	D.P.T, पोलियो, हैपेटाइटिस B (दूसरी खुराक)	$2\frac{1}{2}$ माह में
(iv)	D.P.T, पोलियो, हैपेटाइटिस B (तीसरी खुराक)	$3\frac{1}{2}$ माह
(v)	M.M.R का टीका	9 माह में
(vi)	पोलियो बूस्टर (पहली खुराक)	15 माह में

(viii)	पोलियो बूस्टर (दूसरी खुराक)	5 वर्ष

Answer :- 19

-:- **अन्धापन :-** शिशु में अंधता आधिकांश पायी जाती है, ऐसे बच्चों को विशेष प्रकार की देखरेख दी जाती है, उन्हें विशेष प्रेम दिया जाता है, इन बच्चों को शिक्षित करने के लिए कुछ माध्यमों को अपनाया जाता है. जैसे कुछ बच्चे में कुछ अर्द्ध अंधे होते है तो उन्हें चश्मा लगवाया जाता है, और जो बच्चें पूर्ण अन्धें होते है, उन्हें ब्रेल पद्धति के द्वारा शिक्षा दी जाती है, इसमें बच्चें को बड़े-2 अक्षरो को छूकर महसूस कराया जाता है।

इसके दो रूपों का विवरण इस प्रकार है -

(i) **जन्मजात अन्धता :-** जन्मजात अंधता शिशु में जन्म से होती है यह तब होती है, जब माता गर्भधारण के समय किसी रोग से संक्रमित हो तब शिशु में अंधापन

आ जाता है, या माता के भोजन में कुछ पोषक तत्वों की कमी रह जाती है तब भी शिशु अंधेपन का शिकार हो जाता है,

(ii) **अर्जित अंधता** :- यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब बच्चें का कोई दुर्घटना से पीड़ित हो या जन्म के समय वह किसी बीमारी का शिकार हो गया हो तब शिशु को अंधेपन का शिकार होना पड़ता है इसे ही अर्जित अन्धता कहा जाता है,

Answer :- 20

-:- **मिलावट से आशय :-**

"जब किसी खाद्य पदार्थ से कोई पोषक तत्व निकालकर, कोई और तत्व मिला दिया जाता है इसे ही खाद्य पदार्थों में मिलावट कहते है,"

जैसे :- दूध में यूरिया, स्वर्च, पानी मिला दिया जाता है,

मैदा में अरारोट, चावल का आटा मिला दिया जाता है। इसे ही खाद्य पदार्थों में मिलावट कहा जाता है।

-!- खाद्य पदार्थों में मिलावट से बचने के उपाय :-

खाद्य पदार्थों में मिलावट से बचने के उपाय निम्न है -

(i) **सरकार द्वारा प्रमाणित मानक चिन्ह :-** सरकार द्वारा अनेक मानक चिन्ह प्रमाणित किये गये है - जैसे :- F.P.O, I.S.I, हॉलमार्क, एगमार्क आदि यह चिन्ह खाद्य पदार्थों की शुद्धता को दर्शाते है।

(ii) **जानकारी उपलब्ध कराना :-** किसी खाद्य पदार्थों का क्रय करने से पहले उसके बारे में संपूर्ण जानकारी ग्रहण करनी चाहिए।

(iii) **दुकान की विश्वसनीयता :-** कोई भी वस्तु या खाद्य सामग्री खरीदते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी वस्तु विश्वसनीय दुकान से खरीदें।

(iv) लेबल की जानकारी :- किसी वस्तु या खाद्य पदार्थों को क्रय करने से पहले उसके लेबल की संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। जैसे :- M.R.P, वस्तु कब बनी, कब तक चलेगी, कहाँ बनी आदि।

Answer :- 21

भोजन बनाते समय महिलाओं को हर बात का ध्यान रखना चाहिए - उसे सावधानी पूर्वक आहार को बनाना चाहिए।

-:- भोजन बनाते समय व्यक्तिगत स्वच्छता :-

भोजन बनाते समय महिलाओं को व्यक्तिगत स्वच्छता के निम्न नियमों का पालन करना चाहिए -

(i) नाखून :- भोजन बनाते समय महिलाओं को अपने नाखून **काट** लेने चाहिए क्योंकि नाखूनों में कई प्रकारी की गंदगी उपलब्ध होती है और ये हमारे भोजन को दूषित करते

है।

(ii) **बाल :-** परिवार के लिए भोजन बनाते समय महिलाओं को अपने बाल बांध लेने चाहिए और उन पर कपड़ा पहन लेना चाहिए।

(iii) **किसी प्रकार से संक्रमित न हो :-** यदि कोई महिला भोजन बनाते समय किसी संक्रमण जैसे खाँसी, जुकाम इत्यादि से पीड़ित है तो उसे मुंह पर कपड़ा बांध लेना चाहिए।

(iv) **हाथ :-** भोजन बनाते समय व्यक्ति को अपने हाथ धो लेने चाहिए ताकि भोजन दूषित न हो। और परिवार के सदस्यों को कोई हानि न पहुंचे।

(v) **भोजन परोसने का तरीका :-** व्यक्ति को भोजन बनाते समय या परोसते समय साफ बर्तनों का प्रयोग करना चाहिए।

Answer :- 22

-:- बचत एवं संचय में अंतर :-

बचत और संचय में अंतर इस प्रकार है -

-:- **बचत :-** (i) बचत से आशय यह है कि जब धन का विनियोग बैंक में किया जाता है।

(ii) बचत से धन में वृद्धि ही होती है।

(iii) बचत के द्वारा धन के खोने का भी भय नहीं रहता है।

(iv) इसकी सहायता से धन हमेशा सुरक्षित रहता है और कभी भी निकाला जा सकता है।

-:- **संचय :-** (i) संचय से आशय यह है कि जब धन घर में ही संचित किया जाता है।

(ii) संचय के द्वारा धन में कमी होती है।

(iii) संचय से धन के खोने का भी भय बना रहता है।

(iv) संचय से धन हमेशा असुरक्षित रहता है।

Answer :- 23

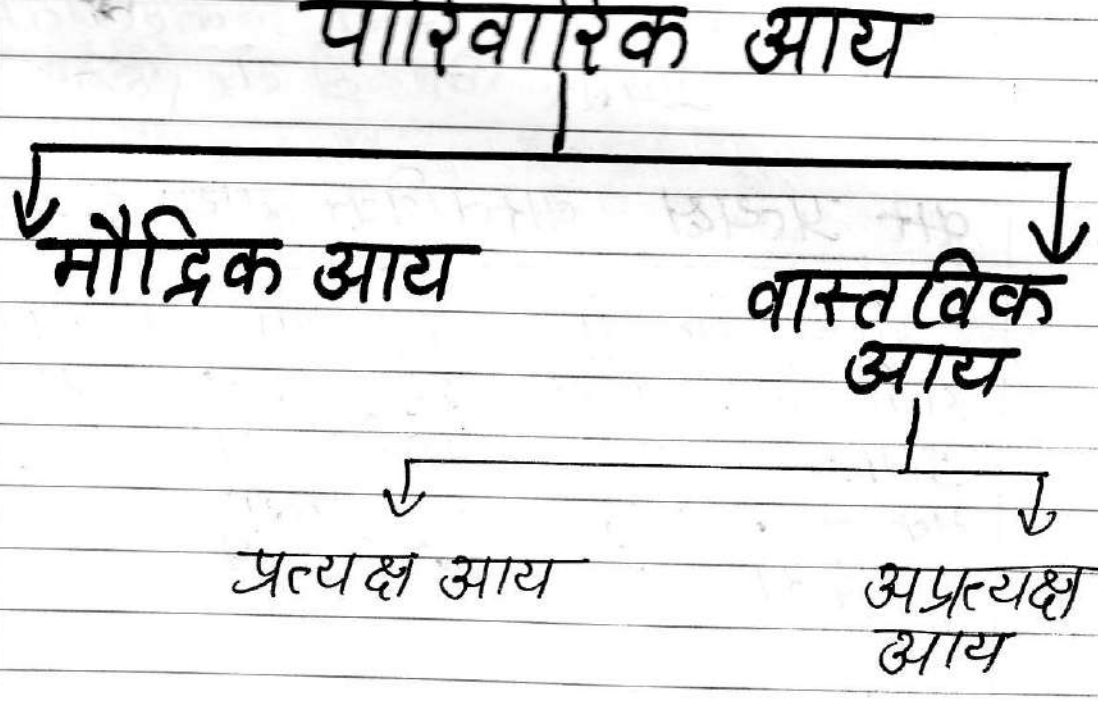

-:- **पारिवारिक आय :-** जो परिवार के सदस्यों द्वारा निश्चित समय में अर्जित किया गया धन पारिवारिक आय कहलाता है।

(i) **मौद्रिक आय :-** जो आय हमें धन के रूप में या नकद के रूप में प्राप्त होती है उसे मौद्रिक आय कहते हैं। **जैसे :-** स्कूल के अध्यापक को प्राप्त आय, किराय के रूप में प्राप्त आय आदि।

(ii) **वास्तविक आय :-** जो आय व्यक्ति को सेवाओं या संतोष के बदले प्राप्त होती है उसे वास्तविक आय कहलाती है ये दो प्रकार के होते हैं-

(a) **प्रत्यक्ष वास्तविक आय :-** जो व्यक्ति को सेवाओं के रूप में प्राप्त होती है, जैसे :- किसी सरकारी अफसर को रहने के लिए मकान, गाड़ी व अन्य वस्तुएँ सरकार के द्वारा प्राप्त होती है।

(b) **अप्रत्यक्ष वास्तविक आय :-** जो आय किसी व्यक्ति किसी वस्तु के बदले में प्राप्त होती है **जैसे :-** एक मित्र दूसरे मित्र के भाई को पढ़ाता है और दूसरा मित्र पहले

मित्र के कपड़े सीलता है आदि अप्रत्यक्ष आय में आते हैं,

Ans :- 24

∴ खुशी के अवसर पर वस्त्रों का चुनाव :-

खुशी के अवसर अनेक प्रकार के होते है जैसे :- शादी, तीज का त्यौहार, होली, दीवाली आदि। इन पर परिवार के सदस्य हर्ष और उल्लास से परिपूर्ण होते है।

इस अवसर पर आधिकांशतया चमकीले व भड़कीले वस्त्र धारण किये जाते है। जैसे:- महिलाएँ इन अवसरो पर रेशम की साड़ी, बनारसी साड़ी, लहंगा-चुनरी आदि पहना पसंद करती है तथा मेकप भी करवाना पसंद करती है।

और पुरुष इन अवसरों पर सफारी सूट, कुर्ता पायजामा, शेरवानी आदि पसंद करते है। और जूती और शूज पहनना पसंद करते है, जिससे वह हर्षोल्लास के पात्र माने जाते है।

बच्चें इन अवसर पर पैन्ट, जीन्स यदि लड़के है तो बंडी, शर्ट, कुर्ता पायजामा पहन सकते है, और लड़कियाँ है तो वे फ्रॉक, लांन्चा, सूट आदि धारण करती सकती है।

Ans :- 25

वस्त्र व्यक्ति अपना शरीर ढकने के लिए धारण करता है और इससे वह समाज में शालीनता और सभ्यता का पाठ बनता है, इसमें कई प्रकार के वस्त्र होते हैं कुछ स्वयं सिले जाते है तथा कुछ रेडीमेड वस्त्र होते हैं-

:- रेडिमेड वस्त्रों की आवश्यकता

व्यक्ति को रेडिमेड वस्त्रों की आवश्यकता निम्न प्रकार से पड़ती है-

(i) आधुनिक समय में व्यक्ति को कपड़े सिलवाने से अच्छा रेडिमेड वस्त्र पहनना अधिक पसंद है।

(ii) सही समय पर दर्जी उपलब्ध न होने के कारण व्यक्तियों को रेडिमेड वस्त्र खरीदने पड़ते हैं।

(iii) दर्जी द्वारा सिलाई करते समय कई ~~समय~~ बार कपड़े की बनावट गलत हो जाती है जिससे व्यक्ति को रेडिमेड वस्त्र ही खरीदने पड़ते है।

(iv) दर्जी कई बार कपड़े की सिलाई सही धागे से नहीं करती है तो रेडिमेड वस्त्र खरीदना उपयुक्त होता है क्योंकि इसमें सिलाई मशीनों द्वारा लगाई जाती है।

(v) बाजार में कई नापों के वस्त्र उपलब्ध होते है और उनके सिकुड़ने का भय भी कम रहता है। जिससे रेडिमेड वस्त्र खरीदना उत्तम रहता है।

(vi) रेडिमेड वस्त्र विभिन्न प्रकार के रंगों के उपलब्ध हो जाते है इसलिए उन्हे खरीदना सही रहता है।

Ans :- 26

-:- साबुन तथा डिटरजेन्ट में अंतर

साबुन तथा डिटरजेन्ट में अंतर इस प्रकार है -

	साबुन	डिटरजेन्ट
(i)	साबुन में क्षार की और वसा की मात्रा अधिक पायी जाती है,	(i) डिटरजेन्ट में क्षार की और वसा की मात्रा बहुत कम पायी जाती है यह संश्लेषित विधि द्वारा बनाया जाता है,
(ii)	यह पानी में झाग एकदम दे देता है।	(ii) यह भी पानी में एकदम घुल जाता है।
(iii)	इसमें श्रम, समय ज्यादा लगता है	(iii) इसमें श्रम, समय ज्यादा नहीं लगता है,
(iv)	यह कठोर जल के साथ नहीं घुलता है।	(iv) यह कठोर जल के साथ एकदम घुल जाता है।
(v)	यह वस्त्रों को देर में धोता है।	(v) इसमें एकदम घुल जाते हैं तथा

और चमक भी देर में आती है,	वस्त्रों में चमक भी बहुत अच्छी आ जाती है।

Ans :- 24

क्रेच

↓

मुख्य सुविधाएँ

↓

(i) आहार संबंधी सुविधा

↓

(ii) खेलकूद एवं व्यायाम संबंधी सुविधा

↓

(iii) स्वच्छता की सुविधा

↓

(iv) विश्राम संबंधी सुविधा

↓

(v) सुरक्षित वातावरण संबंधी सुविधा

↓

(vi) विशिष्ट जानकारी संबंधी सुविधा

-:- क्रेच [Creche] :-

क्रेच से आशय यह है कि जो माता - पिता नौकरी पेशा वाले होते है उन को अपने शिशु या बच्चों को क्रेच नामक संस्था मे छोड़ देते है, ये हर शहर में मौजूद है, इसमें घर से बच्चों को गाड़ी के द्वारा ले जाया जाता है,

-:- क्रेच की सुविधाएँ :-

(i) आहार संबंधी सुविधा :- क्रेच में शिशु के आहार संबंधी सुविधा का भी ध्यान रखा जाता है, यदि माता - पिता के द्वारा यह सुविधा दी जाती है तो इसका विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए,

(ii) खेलकूद एवं व्यायाम संबंधी सुविधा

क्रेच में शिशु को खेलकूद एवं व्यायाम संबंधी सुविधा भी उपलब्ध होनी चाहिए, शिशु के लिए खिलौने एवं व्यायाम सुरक्षित होना

चाहिए, इससे खेलने से कोई हानि नहीं होनी चाहिए।

(iii) **स्वच्छता की सुविधा :-** यदि शिशु मल-मूल का त्याग कर देता है तो उसकी स्वच्छता पूर्ण रूप से करनी चाहिए, उसको साफ करके नई लंगोट पहनानी चाहिए

(iv) **विश्राम संबंधी सुविधा :-** क्रेच में विश्राम की भी अच्छी सुविधा होनी चाहिए कोमल तकिए एवं गद्दे उपलब्ध कराना चाहिए।

(v) **सुरक्षित वातावरण संबंधी सुविधा :**

क्रेच में बच्चों के आसपास का वातावरण सुरक्षित होना चाहिए वहाँ कीड़े, मच्छरों, कॉकरोचों का होना संक्रमित कर देने जैसा है। वहाँ साफ-सफाई का विशेष रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए।

(vi) विशिष्ट जानकारी संबंधी सुविधा :-
क्रेच में काम करने वाले व्यक्तियों को शिशु संबंधी उचित जानकारी होनी चाहिए।

Ans :- 2.9

उपभोक्ता की समस्या

↓

(i) मूल्यों में अंतर

↓

(ii) दोषपूर्ण मापतौल में अंतर

↓

(iii) भ्रामक विज्ञापन

↓

(iv) मानक चिन्हों का उपलब्ध न होना

↓

(v) बाजार में वस्तु का उपलब्ध न होना

↓

(vi) गुणवत्ता की कमी की समस्या

↓

(vii) मिलावट संबंधी समया

↓

(viii) उचित जानकारी उपलब्ध न कराना

इनका विवरण इस प्रकार है -

(i) **मूल्यों में अंतर** :- विक्रेता उपभोक्ता की मजबूरी को देखकर वस्तु के दाम बढ़ाकर बताता है, तथा कई स्थानों में एक ही वस्तु अलग-2 कीमत की होती है।

(ii) **दोषपूर्ण मापतौल की समस्या** :- विक्रेता वस्तु के मापतौल में भी गड़बड़ी कर देता है। जैसे सब्जियों में, अनाजों में आदि।

(iii) **भ्रामक विज्ञापन** :- विज्ञापनों के द्वारा भी उपभोक्ता मूर्ख बन जाते है उसमें बढ़ा चढ़ाकर वस्तुओं को दिखाया जाता है।

(iv) **मानक चिन्हों का उपलब्ध न होना** :- वस्तुओं पर मानक चिन्ह भी उपलब्ध नहीं होते है, जिससे उपभोक्ता उस वस्तु का क्रय कर लेता है।

(v) बाजार में वस्तु का उपलब्ध न होना

कई बार प्रतियोगिता लोग आप और विक्रेता आपस में मिल जाते हैं और उपभोक्ता को वस्तु उपलब्ध नहीं होती है।

(vi) गुणवत्ता की कमी की समस्या :-

विक्रेता वस्तुओं की गुणवत्ता को कम कर देता है जब उपभोक्ता उससे अपनी पसंद की वस्तुओं की माँग करता है तो वह उसे घटिया किस्म की वस्तु दे देता है।

(vii) मिलावट संबंधी समस्या :- विक्रेता कई खाद्य पदार्थों में भी मिलावट कर देता और उसे ऊँचे दाम पर बेचता है।

(viii) उचित जानकारी उपलब्ध न कराना :-

विक्रेता कई बार उपभोक्ता को ~~कई बार~~ वस्तु से संबंधित उचित जानकारी उपलब्ध नहीं करता है जिससे वह विक्रेता के जाल में फंस जाता है।

Ans :- 28

जल
↓
अशुद्ध जल को शुद्ध करने की घरेलू विधि
↓
अल्ट्रावायलेट किरणों के द्वारा
↓
जल को उबालकर
↓
आसुत जल की सहायता से
↓
घड़ो में पानी के द्वारा जल को शुद्ध करना

-:- **जल :-** जल हमारी नैसर्गिक आवश्यकता है। इससे हमें बहुत लाभ है। इसमें कई प्रकार की अशुद्धियाँ पायी जाती है।

- तैरनी वाली अशुद्धियाँ
- घुली हुई अशुद्धिया।

(i) अल्ट्रा वायलेट किरणों के द्वारा

जल को किसी पात्र में रख दिया जाता है और वह भी तेज धूप में इससे पानी कुछ घंटों बाद शुद्ध हो जाता है। परन्तु यह विधि अब लागू नहीं होती है।

(ii) जल को उबालकर :- तेज आंच पर भी जल को उबालकर शुद्ध किया जाता है। यह अधिकांश संक्रमण के समय उपलब्ध करायी जाती है।

(iii) आसुत जल की सहायता से

जल को तेज आग पर उबालकर उसे भाप में परिवर्तित किया जाता है और जल वाष्प को पुनः पानी में बदला जाता है इसे आसुत जल कहते हैं।

(iv) घड़ो में पानी के द्वारा जल को शुद्ध करना

जल को चार घड़ो में डाला है, चार घड़ो में कंकड़, रेत, मिट्टी भर दी जाती है, और छेद से रुई या कपड़ा लगा दिया जाता है।

Ans :- 30

दाग धब्बे कई प्रकार के होते हैं - जैसे :- नेल पॉलिश का धब्बा, तेल का धब्बा आदि।

→ धोने की विधि :-

(i) नींबू या नमक की सहायता से धोना :-

किसी भी वस्त्र पर यदि दाग लग जाये तो उस पर नमक या नींबू से भी साफ किया जा सकता है।

(ii) ब्रश द्वारा धोना :- दाग - धब्बों को ब्रुश की सहायता से भी धोया जा सकता है।

(iii) मशीन के द्वारा धोना :- वस्त्रों को मशीन की सहायता से भी धोया जाता है। इसमें कार्य सरलता से पूर्ण हो जाता है।

(iv) इंक रिमूवर की सहायता से :-
इंक रिमूवर की सहायता से वस्त्र धोए जा सकते है। यह कपड़ो पर डालकर धोया जा सकता है।

(v) रासायनिक विधि द्वारा :- विभिन्न रासायनों के माध्यम से भी कपड़े के दाग - धब्बे छुड़ाए जा सकते है। जैसे :- ~~H~~ कार्बोहाइड्रेट आदि।

(vi) विलायक विधि द्वारा :- विलायक विधि द्वारा भी वस्त्र धोये जाते है जैसे :- मिट्टी का तेल, अतारपीन

का तेल आदि)

(vii) रगड़कर धोना :- वस्त्रों को रगड़कर भी धोया जाता है।